पण्डित प्रेमनाथ डोगरा

(एक व्यक्तित्व)

ले०—श्याम लाल शर्मा

Pt Prem Nath ji
Dogra

पण्डित प्रेमनाथ डोगरा

(एक व्यक्तित्व)

ले०—श्याम लाल शर्मा

प्रकाशक
श्री पति शर्मा
२३७ विजय गढ़ जम्मू ।

[प्रथम बार १०००]

एप्रिल १९५९

मूल्य—बारह आने या ७५ नये पैसे

मुद्रक
विजय प्रिंटिंग प्रेस
मोती बाजार, जम्मू ।

पूज्य पण्डित प्रेमनाथ जो को

जिनके नेतृत्व में डोगरों ने स्वाभिमान
और आत्म सम्मान की रक्षा
के लिये अनुपम बलिदान
दे कर रियासत का
नाम उज्ज्वल
किया ।

दो शब्द

पण्डित प्रेमनाथ जी के ७५वें जन्म-दिवस पर यह छोटी सी पुस्तिका समर्पित करते हुए प्रसन्नता हो रही है और संकोच भी हो रहा है। प्रसन्नता इस लिए कि इस परिचयात्मक निबन्ध से देश को अपने बूढ़े सेनानी का परिचय मिलेगा और देश-सेवा के लिये त्याग, बलिदान की परम्परा में रियासत जम्मू-कश्मीर का भाग भी अंकित मिलेगा तथा समस्त देश के साथ एकात्मता का साक्षात्कार होगा। संकोच इस लिये कि महान् व्यक्तित्व का परिचय अत्यन्त संक्षिप्त है। इसके लिये रियासत की अस्थिर वृत्तियां तथा अपनी विशेष परिस्थितियां जिम्मेदार हैं।

गत बीस वर्षों में पण्डित जी के साथ सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक क्षेत्रों में कार्य करने का सौभाग्य मिला है। उनका सरल तथा निष्कपट स्वभाव, सौम्य प्रकृति, अदम्य उत्साह और दृष्टिकोण की स्पष्टता दूसरे के पूर्ण रूप से सुनने का धैर्य और विपक्षी के प्रति उदारता स्पृहणीय तथा अनुकरणीय गुण हैं। उनके सम्पर्क तथा सहवास से मनन की प्रवृत्ति को प्रश्रय मिलता है मुखरिता को नहीं। इस लिये भी शायद उन पर लेखनी नहीं उठाई जा सकी।

परन्तु आशा है कि अपनी परिस्थितियों में सुधार होते ही इस महान् व्यक्तित्व को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करने की चेष्टा करूंगा।

—श्याम लाल शर्मा

प्रस्तावना—

आधुनिक भारत में जो गिने-चुने राजनीतिज्ञ राजनीति को अपने निजी या दलगत स्वार्थ-सिद्धि मात्र का अखाड़ा न समझ कर इसके द्वारा वास्तव में निस्वार्थ बुद्धि से राष्ट्र की सेवा में जुटे हुए हैं उनमें पं० प्रेम नाथ डोगरा अग्रणीय हैं।

जम्मू-कश्मीर राज्य को भारत के साथ एक रूप कराने के महान् उद्देश्य को लेकर उन्होंने आज से ११ वर्ष पूर्व सक्रिय राजनीति में प्रवेश किया। उस समय उनकी आयु ६४ वर्ष की हो चुकी थी। सांसारिक सुखों और लोकेषणा की कोई भूक बाकी बची न थी। तब से लेकर आज तक वह इस महान्-उद्देश्य के लिये नितान्त संघर्ष करते आ रहे हैं और उनको बहुत अंशों तक प्राप्त भी कर चुके हैं। इस दृष्टि से उनका राजनीतिक जीवन महान् आदर्शवाद का एक ज्वलन्त उदाहरण है।

परन्तु पं० प्रेम नाथ डोगरा जी के जिस गुण ने मुझे सब से अधिक प्रभावित किया है वह है उनकी मानवता, आप सचमुच प्रेम की मूर्ति हैं। उनके रोम-रोम से उनका महान व्यक्तित्व झलकता है। अपनी निस्वार्थ भावना और प्रमाणिकता के कारण ही पण्डित जी आज न केवल जम्मू-कश्मीर के ही अपितु सारे भारत वर्ष के असंख्य लोगों की श्रद्धा के पात्र बन चुके हैं।

श्री श्याम लाल जी ने उनके महान् व्यक्तित्व पर यह छोटी सी पुस्तक लिख कर बड़ा उत्तम कार्य किया है। मुझे पूर्ण आशा है कि इसे पढ़ कर नई पीढ़ी के सामाजिक कार्य-कर्ता स्फूर्ति प्राप्त करेंगे।

—बलराज मधोक

विषय-सूची

——

डा० मुकर्जी जिनकी रहस्यात्मक-मृत्यु की जांच करवाने में सरकार ने नैतिक साहस का परिचय नहीं दिया।

दो ओमटे

एक व्यक्तित्व

पं० प्रेम नाथ डोगरा

रियासत जम्मू कश्मीर के इतिहास में दो व्यक्तियों के नाम सदा अमर रहेंगे। इस लिए नहीं कि एक महाराजा था और उसने रियासत को एक शासन प्रबन्ध और व्यवस्था प्रदान की अथवा दूसरा एक नेता था जिसने जनता की आवाज़ बुलन्द की तथा उनके कष्ट दूर करके नाम पैदा किया। परन्तु इस दृष्टिकोण से कि पहले के प्रयत्नों से भारतवर्ष की सीमायें उत्तर में दूर चीन, रूसी तुर्किस्तान तथा अफ़ग़ानिस्तान से जा मिलीं और दूसरे के देश प्रेम, उत्साह तथा त्याग ने रियासत जम्मू कश्मीर को एक षड़यन्त्र

विभाजन

में फंसने से तथा भारतवर्ष से पृथक् होने से बचा लिया। पहले के प्रयत्नों में अपने परिवार और व्यक्तिगत लाभ की भावना मुख्यतः विद्यमान है परन्तु दूसरा उदाहरण तो एक दम देश भक्ति, मातृ भूमि के प्रति श्रद्धा, और सेवा भाव का उत्कृष्ट नमूना है।

पहला व्यक्तित्व है स्वर्गीय महाराजा गुलाब सिंह जी का और दूसरे हैं ज़म्मू कश्मीर की जनता के हृदय-सम्राट् पण्डित प्रेम नाथ जी डोगरा। रियासत जम्मू कश्मीर के बानी महाराजा गुलाब सिंह जी के जीवन चरित के विषय में श्री पाणिक्कर[1] हश्मतुल्ला खां[2] और काहन सिंह बिलावरिया[3] ने लिखा है। परन्तु जनता के प्रिय और वयोवृद्ध नेता पं० प्रेम नाथ डोगरा के जीवन वृत्त से अधिकांश जनता परिचित नहीं यद्यपि उनका नाम भारतवर्ष के कोने कोने में बच्चे २ की ज़बान पर है। पण्डित जी ने अपने कर्तृत्व से भारतीय हृदयों में एक अपूर्व स्थान बना लिया है।

पण्डित जी का जीवन और रियासत का वृत्त आज कुछ इस प्रकार सम्बद्ध हैं कि एक का वर्णन दूसरे का स्वयंमेव इतिहास बन जाता है।

---

1 Gulab Singh—The Founder of Kashmir by K. M. Panikkar.

2. तारीख राजगान जम्मू-कश्मीर—लेखक हश्मतुल्ला खां।

3. राजगान जम्मू-कश्मीर—ले० काहन सिंह बिलावरिया।

रियासत की चन्द्रकला की भांति अस्थिर समस्याओं ने ऐसा शांत और निश्चित वातावरण उत्पन्न नहीं होने दिया जिसमें निश्चिन्तता से पण्डित जी के जीवन पर लेखनी उठाई जा सके।

आज भारत की जनता उन्हें जन संघ के भूतपूर्व प्रधान तथा प्रजा परिषद के प्रधान के रूप में जानती है। आप इस समय रियासत जम्मू-कश्मीर की विधान सभा के सब से वयोवृद्ध तथा आदरणीय सदस्य हैं।

आप यथार्थ शब्दों में विरोधी पक्ष के नेता हैं। जिस प्रकार स्वर्गीय डाक्टर श्यामा प्रसाद मुकर्जी भारतीय पार्लियामेंट में अपने व्यक्तित्व की छाप लगाये रहते थे। इसी प्रकार पं० प्रेम नाथ जी रियासत की असैम्बली में छाये रहते हैं।

———

जन्म १८८४

आपका जन्म कार्त्तिक १९४१ विक्रमी तदनुसार अक्तूबर १८८४ में हुआ। अर्थात् इस समय आपने ७५वें वर्ष में पदार्पण किया है। (१८५७ का स्वतन्त्रता प्राप्ति का उत्साह-स्रोत यद्यपि ऊपर से दबा दिया गया था परन्तु वह भावना भिन्न २ रूपों तथा आकृतियों में भारत के भिन्न भागों में साकार हो रही थी। किसे पता था कि रियासत जम्मू-कश्मीर में साम्बा तहसील के सुमहलपुर नामक गांव में एक ऐसी महान् आत्मा शरीर धारण कर रही है जो किसी विकट समय में भारत की अविछिन्नता और एकता के लिये अपने सामर्थ्यानुसार ज़ोर लगा कर भारत के इस भू भाग में देश प्रेम तथा मातृ भूमि के प्रति

श्रद्धा, का स्रोत बहादेगी।

सुमहलपुर जम्मू नगर से १३ मील के अन्तर पर जम्मू पठानकोट राजमार्ग के दक्षिण की ओर मैदानी इलाके में एक प्रतिष्ठित ग्राम है।

पैतृक-व्यवसाय

पं० प्रेम नाथ जी के पिता स्वर्गीय पं० अनंत राम जी ने अपना पारिवारिक पौरोहित्य कार्य तथा पाण्डित्य पैतृक सम्पत्ति के रूप में पाया था और प्रदेश भर में अत्यन्त आदर और सम्मान की दृष्टि से देखे जाते थे।

पं० अनन्त राम जी ने अपने पिता पण्डित दुर्योधन जी के पास श्री गोविन्द पुर में शिक्षा प्राप्त की। पं० साहब दयाल (K.C.S.I., Star of India. जो किशन कोट ज़िला गुरुदासपुर के राजा थे) ने पण्डित दुर्योधन जी को धार्मिक स्थानों के अधिष्ठाता नियुक्त किया था। पण्डित अनन्त राम जी राजा साहब के पोते के सहपाठी के रूप में शिक्षा प्राप्त करते रहे। संस्कृत तथा अंग्रेज़ी का अध्ययन करने के पश्चात् आप सुमहलपुर आ गये और महाराजा रणवीर सिंह जी के मुसाहिब के रूप में काम करते रहे।

वर्तमान रणवीर गवर्नमैंट प्रेस के प्रथम सुपरइनटैण्डैण्ट के रूप में और पश्चात् भारतवर्ष में कश्मीर प्रापर्टी के संरक्षक नियुक्त हुए। शाही मालखाना के सुपरइनटैण्डैण्ट

के पद पर सुचारु रूप में काम करके ३५ वर्ष की सर्विस के पश्चात् रिटायर हुए। और स्पैशल पेन्शन प्राप्त की।

अपने रिटायर्ड जीवन में पं. अनन्त राम जी ने समाज में राजनीतिक चेतना जागृत करने में विशेष भाग लिया। जम्मू म्युन्सीपल कमेटी में पहले नामज़द सदस्य ही होते थे। इनके प्रयास से स्थानीय लोग चुनाव के द्वारा कमेटी में आए। आप म्युन्सीपल कमेटी के प्रधान भी रहे। स्टेट सब्जैक्ट परिभाषा के बनवाने में उनका विशेष हाथ रहा। रियासत की सर्विस में बाहर से आए लोग स्थानीय लोगों को पशुवत समझते थे और उनको आगे बढ़ने से वञ्चित रखते थे। स्टेट सब्जैक्ट की परिभाषा के निर्माण में बेशक एक प्रतिक्रिया की भावना विद्यमान थी। आपने डोगरों में स्वाभिमान और आत्म चेतना का भाव निर्माण किया।

भारत वर्ष की सभ्यता और संस्कृति के निर्माण संरक्षण और परिवर्धन में ब्राह्मण जाति का अद्वितीय स्थान है और जितना भी इस पर गर्व करें कम है। राज नीतिक सत्ता छिन जाने पर, सामाजिकतया निर्बल हो जाने पर, और पारस्परिक छिद्रान्वेषण करके अपने कर्तव्य की इति श्री समझने वाले कर्णधारों की निरर्थकता को देख कर भारत वर्ष का जिसने नैतिक पतन नहीं होने दिया, वह ब्राह्मण जाति है। भूखे रह कर, सरकारी वृत्तियों को ठुकरा कर अपने त्याग और संयम के आधार पर जिन्हों ने देश की, धर्म की, वेदों की तथा स्वाभिमान

की रक्षा की उस जाति का गौरव अपने पैतृक रक्त के द्वारा पण्डित प्रेम नाथ जी को विरासत में मिला। इसका साक्षात्कार पण्डित जी के जीवन के सान्ध्य काल में देश ने अनुभव किया। जातीय गुण व्यक्ति के जीवन में अपनी झलक अनिवार्य रूप में दिखा जाते हैं।

———

बचपन तथा शिक्षा

मातृ सुख आपने नहीं पाया । अभी माता कीगोद में बैठना भी सीखा नहीं था कि मातृ अंक से वञ्चित हो गए । नानी ने अपने स्तन पान से शिशु का पालन किया और पांच वर्ष तक संवधर्न किया। विमाता ने उस रिक्त स्थान की पूर्ति की परन्तु यह सुख भी ६ वर्ष की अवस्था में विधाता ने इन से छीन लिया। पिता की एक मात्र सन्तान होने के कारण आपकी शिक्षा दीक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया गया। आपका प्रारम्भिक जीवन लाहौर में व्यतीत हुआ। आप के पूज्य पिता पं० अनन्त राम जी महाराजा की ओर से लाहौर में कश्मीर प्रापर्टी के संरक्षक नियुक्त किए गए थे।

वहां राजा ध्यान सिंह की हवेली में निवास था। पीर मिट्ठा स्कूल पास ही था। उर्दू के माध्यम से शिक्षा प्राप्त होती रही। उन दिनों पंजाब में हिन्दी का अस्तित्व प्रायः नहीं के बराबर था। तदनन्तर आपको माडल स्कूल में प्रविष्ट कराया गया जहां से आपने १६०४ में मैट्रिक पास किया। स्कूल जीवन में आप सब से अच्छा दौड़ने वाले फुटबाल के सर्वोत्तम खिलाड़ी और हाकी के महारथी माने जाते थे। आप के हैड मास्टर थे श्री टाइडमैन। एक बार पारितोषिक वितरणोत्सव पर पंजाब के लैफटीनैण्ट गवर्नर अध्यक्षता कर रहे थे तो पण्डित जी पहले १०० गज़ की दौड़ दौड़े और प्रथम आए। फिर ४४० गज़ की दौड़ दौड़े और उसमें भी प्रथम आए। इसके पश्चात् आधे मील और एक मील की दौड़ों में प्रथम आए तो हैड मास्टर ने खुश होकर गले लगा लिया। जिस समय पारितोषिक बांटे जाने लगे तो आपने अंग्रेज़ी, हिसाब, फारसी और इतिहास में भी इनाम प्राप्त किये। फोरमैन क्रिश्चियन कालेज के प्रिन्सीपल रेवरण्ड डाक्टर ईविंग भी वहां थे। वे बड़े प्रभावित हुए और मैट्रिक की परीक्षा के उपरान्त जब पण्डित जी कालेज में दाखिल होने के लिये गए तो उसने एक दम प्रसन्नता से पास बिठा लिया और सहर्ष कालेज में प्रवेश दिया।

कालेज जीवन तथा क्रीड़ा क्षेत्र १६०४–१६०८

उन दिनों खिलाड़ियों की बड़ी कदर होती थी। पण्डित जी

के विषय में तो स्वर्ण और सुगन्धि का मेल था। कालेज के चार वर्षों में पण्डित जी प्रिन्सीपल की आंखों का तारा ही बन कर रहे। एक बार की घटना पण्डित जी सुनाते हैं कि मैच समाप्त होने के पश्चात् कुछ विद्यार्थी अपने मूड में जा रहे थे और सिगरेट पी रहे थे कि एक दम आगे प्रिन्सीपल इविंग मिल गये। पण्डित जी ने सिगरेट फेंक दिया। उस समय तो डाक्टर ने कुछ न कहा, दूसरे दिन अपने दफ्तर में बुला कर बड़े प्रेम से कहा 'You are to do what I advise. You are not to do what I do" आप को मेरे उपदेश पर आचरण करना चाहिये। मेरी कुछ कृतियों का अनुकरण आवश्यक नहीं। वे स्वयं भी सिगरेट पीते थे। इस घटना के पश्चात् पण्डित जी को उन्होंने कभी सिगरेट पीते नहीं देखा। छात्र और अध्यापक की आत्मीयता, प्रेम और श्रद्धा का कितना सुन्दर उदाहरण है।

पण्डित जी कालेज में फुटबाल के सर्वोत्तम खिलाड़ी थे। आप Right out खेलते थे और एक बार फुटबाल आप के पास आ जाए तो लगता था कि फुटबाल आपकी टांगों की आकर्षण शक्ति के कारण आप से पृथक् नहीं होता। आप की किक सीधी "डी" में फुटबाल को गिराती थीं। एक मैच का वर्णन करते हुए आप बताते हैं कि गवर्नमैंट कालेज से मुकाबला था। टीम वह भी ज़बरदस्त थी, हाफ टाईम हो गया। कोई टीम गोल न कर सकी थी। फोरमेन क्रिस्चयन कालेज की स्थापित प्रतिष्ठा डावांडोल हो रही

थी। डा० इर्विंग ने पण्डित प्रेम नाथ की ओर देखा जैसे विश्वामित्र जी ने सीता स्वयंबर में राम की ओर देखा था। पण्डित जी ने अपनी स्फूर्ति का अद्भुत प्रदर्शन कर आखिरी मिण्टों में गोल किया। सारा क्रीड़ा क्षेत्र करतल ध्वनि से गुञ्जित हो उठा। डा० इर्विंग ने कहा Prem Nath, you have saved my honour and that of my college. प्रेमनाथ! तुमने मेरी तथा मेरे कालेज की प्रतिष्ठा बचाई है।

आज भी उनकी पाकेट-वाच तथा भिन्न भिन्न सर्टिफिकेट उन मधुमय दिनों की तसवीर सामने ला देते हैं। पण्डित जी के अपने मुख से उन विशेष अवसरों पर खेले गए मैचों का वर्णन विचित्र प्रकार का आनन्द प्रदान करने वाला होता है। प्रजा परिषद् के आन्दोलनों में दो बार उनके साथ कारावास के सहवास में कालेज जीवन के खेल के मैदान के अनुभव सुन कर डयूक आफ वैलिंगटन के शब्द स्मरण हो आते हैं:— कि Battle of waterloo was fought and won at the fields of Eton and Harrow पण्डित जी के व्यवहार में निष्कपटता, सरलता और विपक्षी के प्रति उदारता उसी क्रीड़ा क्षेत्र की देन हैं। यह एक सर्व विदित बात है कि विरोधी भी निःशंक होकर सच्ची सलाह के लिए पण्डित प्रेम नाथ डोगरा पर पूर्ण विश्वास रखता है। पण्डित जी का व्यक्तित्व एक स्पृहणीय व्यक्तित्व है।

उस Sportsman ship का प्रभाव यह है कि पण्डित जी इस अवस्था में भी अदम्य उत्साह और सुन्दर स्वास्थ्य

के स्वामी हैं। अपने कार्य की संलग्नता और परिश्रम से पण्डित जी ने युवकों को मात किया है। जिन संघ के प्रधान के रूप में पण्डित जी ने १६५६ में पंजाब के भ्रमण में एक बार पन्द्रह दिनों में ६० स्थानों पर भाषण दिये और मीटिंगें लीं। विधान सभा के चुनावों में जम्मू प्रांत में सब से अधिक स्थानों पर जिन में ऐसे दुर्गम स्थान भी थे जहां केवल पैदल ही पहुंच हो सकती है पण्डित जी ने भ्रमण किया। और अपने कार्य कर्ताओं में नवीन उत्साह और प्रेरणा प्रदान की। आज भी पण्डित जी प्रति दिन प्रातः तीन चार मील का भ्रमण करते हैं।

गवर्नमैंट सर्विस

पण्डित जी ने १६०८ में बी. ए. की परीक्षा पास की। रियासत में उस समय स्थानीय युवकों का उच्च शिक्षा ग्रहण करना एक बड़ा महत्व पूर्ण कार्य था। पण्डित जी को महकमा माल में लिया गया और आप ट्रेनिंग के लिये पंजाब के भिन्न भिन्न स्थानों पर उस समय के योग्य अफसरों से अनुभव प्राप्त कर सब से पहले १६०६ में तहसील अखनूर में ट्रेनिग के सिलसिला में तहसीलदार नियुक्त हुए। १६१० में आपको उधमपुर में असिस्टैण्ट सेटलमैंट आफिसर लगाया गया। १६१२ में आपको मुनसिफ के अधिकार देकर जम्मू भेजा गया। १६१३ में आप गवर्नर कश्मीर के सैक्रेटरी नियुक्त किए गए तथा इसी दौरान में आपको वज़ीर वज़ारत

मीर पुर लगाया गया। तदनन्तर १९१४ में महाराजा हरि सिंह जी (वर्तमान सद्रे रियासत युवराज कर्ण सिंह के पिता) ने जो उस समय महाराजा प्रताप सिंह जी के पश्चात् उत्तराधिकारी होने वाले थे। पण्डित प्रेम नाथ जी को Lent आफिसर के रूप में ले लिया। सर्विस के उस १२ वर्ष के काल में आपने अपने उच्चाधिकारियों पर अपनी कार्य कुशलता और योग्यता तथा सच्चरिता की धाक् बिठा दी। वह ऐसा समय था जब आधुनिक पार्टी पालिटिक्स ने अधिकारियों की योग्यता को आतंकित तथा कुण्ठित नहीं किया था और शासन में एक Sanctity (पवित्रता) की भावना अनिवार्य होती थी। महाराजा हरि सिंह अपनी पैतृक जागीर में शिकार खेलने के लिए बहुधा कार्य-क्रम बनाते रहते थे। पण्डित जी को उन्हें बहुत समीप से देखने का समय मिला है। महाराजा बहादुर में प्रजा तन्त्र की भावना प्रारम्भ से ही विद्यमान थी। आप का यह आदेश होता था कि बेगार लेना जुर्म है। और वह देखते थे कि कोई अफसर इस आज्ञा का उल्लंघन तो नहीं करता। दर्बार लगा कर लोगों की शिकायतें सुनना और तत् क्षण न्याय कर देना आपने अपनी जागीर में प्रारम्भ किया। महाराजा को पोलीस के सिपाही से कुछ चिढ़ सी थी। किसी भी उत्सव पर प्रबन्ध के लिए भी पोलीस का सिपाही नहीं होना चाहिए, ऐसी उनकी प्रबल इच्छा होती थी। एक बार एक सब इन्सपैक्टर आया और उसने बड़े ठाठ से अटैणशन कर सैल्यूट की। अब वह इस स्थिति में खड़ा है और महाराजा हैं कि

उसकी तरफ देखते नही, कोई आध घण्टे की तपस्या हो जाने के पश्चात् पण्डित जी ने आकर उसे मुक्ति दिलाई।

प्राकृतिक सौन्दर्य में रोग चिन्ह

भद्रवाह और किश्तवाड़ का इलाका अपने प्राकृतिक सौन्दर्य और जल वायु की दृष्टि से कश्मीर का छोटा रूप ही समझा जाता है। परन्तु नैतिक शिथिलता और मद्य का इतना खुला प्रचार है कि इन बातों का प्रभाव वहां की जन संख्या पर उग्र रूप में पड़ा है। हां एक विचित्रता है कि इस इलाके के मुस्लमान इन व्यसनों में नहीं फंसे हैं। एक ही स्थान में रहने वाले हिन्दुओं और मुस्लमानों के स्वास्थ्य, आचार व्यवहार और सामाजिक जीवन में भारी अन्तर है। नैतिक शिथिलता के कारण इस प्रदेश की हिन्दू जनता फिरंग रोग से जिसे 'पहाड़ी रोग' भी कहते हैं पीड़ित है और निःसन्तान होती जा रही है। और यदि नैतिक पतन की यही गति रही तो अगले पचास वर्षों में हिन्दू मात्र का अस्तित्व वहां समाप्त प्रायः हो जाएगा।

हिन्दुत्व मृत्यु के मुख में

पण्डित प्रेम नाथ डोगरा ने अपने समय में इस नैतिक पतन की उग्रता के परिणाम को देख कर गवर्नमैंट को प्रेरित किया कि लोगों को इस रोग से बचाने के लिए सरकारी तौर पर इलाज का प्रबन्ध किया जाए। चुनांचि तब से प्रति वर्ष

गवर्नमैंट इन पहाड़ी प्रदेशों में Venereal Diseases के निराकरण और रोक थाम के लिये डाक्टर और दवाईयां भेजती है, परन्तु इस उपचार और रोग की निस्बत में भारी अन्तराल है। इस भयंकर आपत्ति की ओर जम्मू कश्मीर की सरकार एवं केन्द्रीय सरकार तथा देश और धर्म का कल्याण करने वाली संस्थाओं को ध्यान देना चाहिये। इस सामाजिक पतन और रोग पीड़न को जातीय स्तर ही नहीं अपितु मानवता के दृष्टिकोण से हल करने की आवश्यकता है।

किश्तवाड़ तथा पाडर

किश्तवाड़ का इलाका और उसकी उत्तर सीमा के इलाके पाडर पांगी इत्यादि इतने दुर्गम और कटे हुए हैं कि अनाज बकरियों पर लाद कर यहां से ले जाना पड़ता है। पण्डित जी ने अपने प्रबन्ध काल में वहां अनाज की त्रुटि और गलत बांट से कभी क्षोभ नहीं होने दिया। आज उस अकाल पीड़ित इलाके में लाखों मन अनाज जाता है लेकिन उसकी बांट कुछ ऐसे ढंग से होती है कि क्षोभ का वातावरण बढ़ता ही जाता है और भूख से पीड़ित व्यक्तियों का चीत्कार गवर्नमैंट को भी परेशान कर रहा है।

पं०—प्रेम नाथ जी ने शिक्षा प्रचार के लिए विशेष यत्न किये वह व्यक्तिगत रूप से कई छात्रों को छात्र-वृत्तियां और अन्य सुविधायें प्रदान करते रहते थे। पण्डित जी ने शासन प्रबन्ध ऐसा सुगम और सुचारू ढंग से चलाया कि आज भी उन इलाकों में पण्डित जी का नाम बड़े आदर और प्रेम से लिया

जाता है। इतनी बड़ी अवधि के उपरांत जब पण्डित जी प्रजापरिषद् के प्रधान के रूप में वहां पहुंचे तो लोगों ने उनके आगमन पर श्रद्धा के फूल भेंट किये और कश्मीर को भारत से अलग करने की चेतावनी को ध्यान से सुना। तथा जिस समय शेख अब्दुल्ला के षड्यन्त्र को बेनकाब करने के लिये प्रजा-परिषद् ने आन्दोलन किये तो भद्रवाह और किश्तवाड़ के लोगों ने पण्डित जी के आह्वान पर अपना सर्वस्व निछावर करने में संकोच नहीं किया।

मुजफ्फराबाद में वज़ीर वजारत १९०७-१९३१

बारह वर्ष महाराजा हरिसिंह जी की प्राइवेट जागीर में काम करने के पश्चात् इनको पुनः जम्मू कश्मीर सर्विस में वापिस लिया गया और मुजफ्फराबाद में सैटलमैंएट आफीसर बनाया गया। और कुछ समय के पश्चात् वज़ीर-वज़ारत बनाया गया। उस समय के वज़ीर वज़ारत को आज-कल डिप्टी-कमिशनर कहा जाता है। यह समय वह कसौटी का समय था जब राज्य की सेवा और जनता की सेवा में भीषण अन्तराल उपस्थित हो गया था।

रौण्ड टेबल कांफ्रेंस लण्डन १९३१ में महात्मा गान्धी जी के समर्थन में हिन्दू मुस्लिम एकता के प्रश्न पर राष्ट्रीयता पूर्ण उद्गार प्रकट कर महाराजा हरि सिंह जी ने अंग्रेज़ी सत्ता को अपने विरुद्ध कर लिया। इस राष्ट्र-प्रियता का परिणाम भी शीघ्र ही सामने आया। अंग्रेज़ी शासन के राजनैतिक विभाग

ने रियासत में एक स्कूल मास्टर मुहम्मद अब्दुल्ला को कठपुतली बना कर रियासत में मुस्लिम एजीटेशन प्रारम्भ करवा दी। कश्मीर प्रांत में आग भड़की और इसकी लपटें पुन्छ, राजौरी, भिम्बर कोटली और मीर पुर में पहुँची। निरीह हिन्दू जनता को मजहबी जोश की बलि-वेदी पर चढ़ा दिया गया अनन्तनाग और विचार नाग में पाशविकता के प्रदर्शन हुए। हिन्दू स्त्रियों के स्तन काट दिये गये और बलात्कार अपहरण, साड़ फूंक के काण्ड इतने और इतनी तीव्र गति से प्रारम्भ हुए कि जम्मू कश्मीर की अपनी सेना से इस स्थिति को सम्भालना कठिन हो गया। अंग्रेजी सत्ता से सहायता की प्रार्थना की गई और अंग्रेजी फौजें दन दनाती हुई अमन कायम करने के लिए रियासत में आ पहुँची। अपना त्राता समझ कर जिस समय पीड़ित जनता अपनी सहायता के लिए पुकारती तो वे गोरे अफसर ताना बाजी करके महात्मा गांधी को आवाज़ देने को कहते थे।

वह कठ पुतली स्कूल मास्टर आज का शेख अब्दुल्ला है जो स्वतन्त्र कश्मीर के नारे की आड़ में कश्मीर को भारत से पृथक् रखने तथा कश्मीर के स्पैशल स्टेटस के लिये उत्तरदायी है। पण्डित प्रेम नाथ जी डोगरा उस समय वज़ीर वज़ारत थे। मुजफ्फराबाद वैसे भी रियासत की सीमा के समीप होने के कारण सीमा प्रांत और पंजाब के मुसलमानों के पहुंचने के लिए सुगम स्थान था। परन्तु बाहर के लोग तभी गड़-बड़ कर सकते हैं जब स्थानीय लोग उनकी पूरी-पूरी सहायता करें।

पं० प्रेम नाथ जी ने उस भीषण समय में मुज़फ्फराबाद के मुस्लमानों को अपने व्यवहार और नैतिक कुशलता से इस प्रकार प्रभावित रखा कि रियासत भर में जहां जहां भी मुस्लमानों ने विद्रोह किये सरकार को लाठी और गोलीं का सहारा लेना पड़ा, परन्तु मुजफ्फराबाद जैसे मुस्लिम गढ़ में मुस्लमानों पर गोली चलाने और लाठी बरसाने का कोई अवसर नहीं आया। और अल्प संख्यक हिन्दू सिक्ख जनता भी सुरक्षित रही। इसके विषय में शेख अब्दुल्ला ने डोगरा सदर सभा के रंग-मंच से १९३८ में भाषण करते हुए पण्डित प्रेम नाथ जी को धन्य-धन्य कहा था और उनकी कुशल नीति तथा स्थिति को सम्भालने की योग्यता की भूरि भूरि प्रशंसा की थी।

तत्कालीन महाराजा के हिमायती और उनके साथ खून का नाता जता कर उच्च पदवियों पर पहुँचने वाले कुछ राजपूत अफसर महाराजा की संकुचित बरादरी भावना से लाभ उठा कर पण्डित जी पर इस कारण नाराज हो गये कि मुजफ्फराबाद में पण्डित जी ने कोई गोली काण्ड या हत्या काण्ड नहीं होने दिया। पण्डित जी को इसी रोष की लपेट में एक साधारण सी बात बना कर समय से पहले रिटायर कर दिया गया। परन्तु पंडित जी की शांत वृत्ति और गम्भीर प्रकृति ने इस अत्याचार के प्रति प्रतिकार की भावना नहीं उत्पन्न होने दी और न ही उस व्यक्ति विशेष के प्रति कोई दुष्भावना उत्पन्न होने दी जिसने पंडित जी की पदच्युति में अपने अधिकारों का बढ़-चढ़ कर प्रयोग किया था। वह व्यक्ति आज भी जीवित है परन्तु अन्तर इतना ही है कि वह महाराजा का रक्त

सम्बन्धी होते हुए भी महाराजा के हृदय से कोसों दूर है और पं० प्रेम नाथ जी अपनी सच्चरित्रता और दृढ़ निष्ठा के कारण महाराजा के परिवार में ही नहीं जनता और सरकार के प्रत्येक व्यक्ति के प्रिय मित्र हैं।

आज रक्त के सम्बंधी "हकूमते वकत" के वफादार होकर अपने वंशज महाराजा को भूल गये हैं। पुराने समय में इसी 'हकूमते वकत की वफादारी ने महाराणा प्रताप को मंझदार में डुबोया था। इतिहास की पुनरावृत्ति कैसी मार्मिक है।

———

जीवन का दूसरा दौर:-जन-सम्पर्क

अपने मधुर स्वभाव और प्रिय बर्ताव के कारण पं० जी सर्व प्रिय तो थे ही अब आपका सम्पर्क जनता के साथ समान स्तर पर आने लगा। आपने सामाजिक और धार्मिक संस्थाओं में पदार्पण कर समाज में एक नई स्फूर्ति और चेतना का निर्माण किया। जो स्थिरता तथा जड़ता समाज को आक्रान्त किये बैठी थीं उनको दूर भगा कर व जागृति का संदेश दे देश तथा जाति को स्वयं अपना भला बुरा सोचने पर विवश कर दिया।

हरिजन सेवा :- पण्डित जी समय की गति विधि को तथा भविष्य को भली भांति समझते थे। आपने हरिजनों की हालत को सुधारने और उनका स्तर ऊंचा करने के लिये प्रांत का भ्रमण किया। उनको कूओं पर न चढ़ने देना तालाबों से पानी न भरने देना, स्कूलों में उनके बच्चों को प्रवेश न करने

देना इत्यादि कुप्रथाएं समाज की शक्ति को क्षीण किये जा रही थीं। आपने भ्रमण करके जनता को सचेत किया और गौ ब्राह्मण में श्रद्धा रखने वाले अपने समाज में इस पददलित अंग की दशा सुधारने पर जोर दिया। आज के राजनैतिक वातावरण और शासन के द्वारा तथा स्वार्थी व्यक्तियों के प्रयत्नों से यद्यपि हरि जन अपनी व्यक्तिगत फूट में लिप्त हैं और बाकी समाज से पृथक हो रहें हैं फिर भी पं० प्रेम नाथ जी के व्यक्तित्व के सामने सब श्रद्धा से नत-मस्तक होते हैं। अपने पर इतने एहसान करने वाले व्यक्ति को भूल जाना आज के स्वार्थ परायण युग में बड़ी बात नहीं परन्तु पंडित जी के प्रति हरिजनों की श्रद्धा किसी मात्रा में कम नहीं हुई।

ब्राह्मण सभा के प्रधान और कार्य कर्त्ता के रूप में

ब्राह्मण जाति में आत्म सन्तोष की भावना कुछ इस प्रकार की है कि इस गुण (या अवगुण) के कारण वह अपना कर्तव्य भूल गए हैं। केवल भिक्षा वृत्ति पर निर्भर रह कर कोई जाति आज के युग में प्रगति की दौड़ में आगे नहीं बढ़ सकती। आप ने ब्राह्मण जाति का सम्मेलन कर उन के पारस्परिक भेद-भाव दूर कर के शिक्षा प्रसार के लिए उत्साहित किया।

ब्राह्मण मुख्य मण्डल (आज की डोगरा ब्राह्मण प्रतिनिधि सभा) का नव-निर्माण करने में जिन व्यक्तियों का प्रमुख भाग है उन में पण्डित जी का नाम बड़े आदर और गर्व से लिया जाता है।

सनातन धर्म सभा के प्रधान के रूप में

धार्मिक भावना के निर्माण और प्रचार के लिए बाहर से सनातन धर्म के विद्वानों को बुला कर श्री कृष्ण जन्माष्टमी, विजया दशमी इत्यादि महोत्सवों की प्रथा निर्माण करने में आपका विशेष हाथ है। पहले ये उत्सव राज्य की ओर से शाही ठाठ से मनाये जाते थे। राज संरक्षण समाप्त होने पर जनता में अपने उत्सव आप मनाने और धर्म परायण होने का उत्साह निर्माण करने का श्रेय भी आप को ही जाता है।

डोगरा सदर सभा के नेता

डोगरा सभा रियासत जम्मू कश्मीर की सर्व प्रथम राजनीतिक संस्था है (शासन के प्रभाव में आकर आज इस के पदाधिकारियों ने लैजिस्लेटिव कौंसिल की दो सीटों के लिए सभा को समाप्त कर दिया—यह खेद की बात है।)

प्रारम्भ में लोकल सैल्फ गवर्नमैंएट अर्थात् नागरिकता के अधिकारों और कर्तव्यों को लेकर यह सभा आगे बढ़ी, उस समय इस प्रकार की मांग भी विद्रोह से कम नहीं समझी जाती थी।

परन्तु यह सभा इस छोटे प्रारम्भ को लेकर चली और देश को उन्नति पथ पर ले जाने के लिए कांग्रेस के विधायक कार्य क्रम को अपनाने लगी। इस सभा का स्मरणीय कार्य

स्टेट सब्जैक्ट की परिभाषा का निर्माण करना है। आज भले ही इस कृत्य को अच्छी नज़रों से नहीं देखा जाता और यही वह स्टेट सब्जैक्ट परिभाषा है जिस को लेकर आज की गवर्नमैण्ट भारत के किसी व्यक्ति को रियासत में बसने की आज्ञा नहीं देती और इसी के आधार पर मुस्लिम बहुसंख्या को अपने साथ लेकर शेख अब्दुल्ला स्वतन्त्र कश्मीर के स्वप्न साकार करने के पीछे पड़ा हुआ है।

आज चुनावों में वास्तविकता को झुठला कर दूसरों को पछाड़ देने के हथकंडों में विरोधी लोग स्टेट सब्जैक्ट का नाम ले ले कर पं० जी को कोसते हैं और उन को संकुचित दृष्टिकोण रखने वाला व्यक्ति बता कर जनता को गुमराह करते हैं परन्तु समझदार प्रत्येक व्यक्ति यह जानता है कि कई नियम व कानून सदा के लिए लाभदायक न होते हुए भी सामयिक महत्त्व की दृष्टि से अत्यावश्यक होते हैं। स्टेट सब्जैक्ट के निर्माण के समय में रियासत एक विशेष प्रकार की निरीहावस्था में थी। एक तो पंजाब और भारत के अन्य भागों से आये हुए आफिसर यहां के लोगों को पशुवत् समझ कर उन से बड़ा दुर्व्यवहार करते थे, उन के मान सम्मान पर निरंकुश होकर शासन करते थे। दूसरे अखिल भारतीय स्तर पद उच्चशिक्षा के लिए रियासत के लोगों को कोई अवसर नहीं मिल पाता था (आज स्टेट सबजैक्ट की बदौलत ही रियासत के सैंकड़ों विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिए बड़े २ विश्वविद्यालयों में सरलता से स्थान प्राप्त हो जाते हैं जो अन्यथा नहीं हो सकते

थे) तीसरा और प्रमुख कारण बहुत महत्त्वपूर्ण था और जिस रहस्य को खोलने में आज कोई अड़चन नहीं है। बात यह थी कि कश्मीर के स्वर्गीय सौंदर्य से आकृष्ट हो कर अंगरेज़ों के दांत बहुत बुरी तरह से स्टेट पर गढ़े हुए थे और उनका बस चलता तो वह काश्मीर की चप्पा २ ज़मीन खरीद कर उसे पूर्ण रूप से अपनी मल्कीयत बना लेते परन्तु पं० जी की सामयिक सूझ-बूझ ने स्टेट सबजैक्ट की सुदृढ़ दीवार लगा कर काश्मीर को विदेशियों की जायदाद बन जाने से बचा लिया हमें इस के लिए पं० प्रेमनाथ जी तथा उस कमेटी का कृतज्ञ होना चाहिए।

आज इस स्टेट सब्जैक्ट परिभाषा से हिन्दू जनता को भारी नुक्सान पहुंच रहा है। जन संख्या के आधार पर योग्यता के माप दण्ड को बलिदान कर दिया गया है और पंजाब में डोगरों के प्रति बहुत कटुता पाई जाती है।

परन्तु आशा है इन तथ्यों को जान लेने के बाद स्टेट-सबजैक्ट के प्रति लोगों की गलतफहमी दूर हो जायगी। रहा स्टेट सबजैक्ट का आज के युग में महत्त्व तो यह मानने में कोई आपत्ति नहीं कि आज परमिट सिस्टम की निरर्थकता की भांति इसकी भी कोई आवश्यकता नहीं। परमिट सिस्टम भी अपना सामयिक महत्त्व रखता था जिस का महत्त्व समाप्त हो जाने पर अब उसे समाप्त कर दिया गया है और स्टेट-सबजैक्ट भी अब समाप्त कर देना चाहिए।

आज जीवन के चौथे पाये में आकर पण्डित जी ने

रियासत जम्मू कश्मीर और भारत माता की अखण्डता के लिए जो सेवा और बलिदान किये हैं उन्होंने स्टेट सबजैक्ट की कलुषता को बिल्कुल धो दिया है और अब पण्डित जी रियासत जम्मू कश्मीर के ही नहीं सारे भारत वर्ष के प्रिय नेता हैं। जिनको यह स्टेट सबजैक्ट की परिधियां बांध नहीं सकतीं और स्टेट सबजैक्ट के पोषक वही पं० जी आज अपने कर्तृत्व से "वसुधैव कुटुम्बकम्" मंत्र के मूर्तिमान प्रतीक बन चुके हैं।

जिन्दगी का मोड़

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नेता के रूप में

जिन दिनों भारत की स्वतन्त्रता तथा उन्नति के लिए कांग्रेस हिन्दू सभा, सोशिलस्ट पार्टी और फार्वड ब्लाक आदि संस्थाएं अपना २ दृष्टिकोण लिए प्रयत्न शील थीं, उन्हीं दिनों डा० केशव बलिराम हेडगेवार ने सब संस्थाओं में गहरा पैठ कर काम किया और अन्त में इस निश्चय पर पहुंचे कि जब तक गृह-स्वामी घर की रक्षा और देख-भाल के लिए स्वयं क्रिया-शील नहीं होता तब तक घर की रक्षा तथा उन्नति नहीं हो सकती।

पड़ोसी या किरायेदार रक्षा करने की कीमत मांगते हैं। प्रमुख संस्था कांग्रेस की इस आस्था और प्रचार के कारण कि

जब तक मुस्लमान सम्मिलित नहीं होते कोई प्रयत्न राष्ट्रीय नहीं हो सकता हिन्दुओं को अपने देश में एक वर्ग बना दिया और जातीयता की भावना से वञ्चित कर दिया । डा० हैडगेवार ने 'हिन्दू' शब्द को संकुचितता के गढ़े से निकाल कर राष्ट्रीयता के यथोचित सिंहासन पर आसीन किया। उन्होंने 'हिन्दू' की परिभाषा की कि भारत भूमि में जन्म लेने वाला व्यक्ति जो इसे अपनी जन्म-भूमि तथा धर्म भूमि मानता है, भारत जिस की प्रथम और अन्तिम श्रद्धा का केन्द्र है वह हिन्दू है। डाक्टर जी ने भली-प्रकार अनुभव किया कि हिन्दूओं का प्रथम और अन्तिम श्रद्धा का स्थान भारत को छोड़ कर अन्य कहीं नहीं है। उनके मान दण्ड, धार्मिक ग्रन्थ, तीर्थ-स्थान, महा-पुरुष, उनका इतिहास, संस्कृति सभ्यता तथा भाषा सब में विविधता होते हुए भी एक रूपता है। राष्ट्र-पुरुष के शरीर में एक ही रक्त प्रवहमान है । इसलिए जब तक हिन्दुओं का संगठन नहीं हो जाता तब तक भारत का स्वतन्त्र होकर भी उन्नति करना कठिन है। स्वतन्त्रता प्राप्ति दुष्कर नहीं जितनी कि प्राप्त की हुई स्वतन्त्रता की रक्षा।

इस अनुभूत दृष्टि-कोण को लेकर डा० हैडगेवार ने बारह वर्ष इस अनुभव की परीक्षा की। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना करके उसका पोषण तथा संवर्धन किया।

१६२५ से १६३७ तक बारह वर्ष संघ का कार्य-क्षेत्र मुख्यतया नागपुर तथा विदर्भ देश ही रहा । तदनन्तर यह कार्य समस्त भारत में विस्तृत हुआ। आजन्म कार्य करने की

शपथ लेकर आगे बढ़ने वाले नव युवक देश के कोने कोने में पहुँचे और राष्ट्रीयता की दीक्षा देने लगे। उनके कार्य का ढंग शांत और निश्चित रूप से प्रति दिन एकत्रित होना और शारीरिक व्यायाम के साथ बौद्धिक विचार विमर्ष करना भी था। कबड्डी, खो-खो जैसीं स्वदेशी तथा बिना मूल्य की खेलों के साथ साथ भारत वन्दना के गीत गाए जाते थे और चरित्र निर्माण की बातों की चर्चा चलती थी। एक घण्टा के लिये यह कार्य-क्रम दैनिक रूप में चलते थे। देश की स्वतन्त्रता, उन्नति और परम वैभव के लिए इन कार्य-क्रमों का यथार्थ महत्व है। निष्ठावान स्वयं सेवक संघ कार्य की परिधि को विस्तृत करना राष्ट्रीय कर्तव्य मानते हैं।

1940
१९५० में केशव कपूर नाम का एक नवयुवक स्यालकोट से आया और उस ने दीवान मंदिर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा खोली। यह वट बीज कभी इतना विस्तार लेगा और कठिन समय में समाज को त्राण देगा कोई अनुमान भी न कर सकता था। देश विभाजन के परिणाम स्वरूप रियासत में प्रविष्ट लाखों शरणार्थियों की "स्टेट रिलीफ कमेटी" के रूप में और तदुपरान्त "पंजाब रिलीफ कमेटी" के नाम पर राष्ट्रीय सेवक संघ के स्वयं सेवकों ने जो अनुपम सहायता की वह संघ कार्य की महत्ता का ज्वलन्त उदाहरण है। पाकिस्तानी आक्रमण के कारण जिस समय मीरपुर, भिम्बर, जम्मू तहसील, रणवीर सिंह पुरा, साम्बा, हीरानगर, कठूआ के इलाकों में आग भड़क उठी और रियासत की सेना छोटी २ टुकड़ियों में

बंट कर और शत्रु की घोरता का मुकाबला करते हुए स्वाहा हो रही थी उस समय ध्येयनिष्ठ स्वयं सेवकों ने इन प्रदेशों में पाकिस्तान द्वारा लूटमार आतंक और अत्याचार से जनता की रक्षा की।

कोटली में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा के ध्येयनिष्ठ और वीर पुत्र श्री वेद प्रकाश चड्ढा का अनुपम बलिदान स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाने योग्य है। भारतीय हवाई जहाजों ने कोटली में अपनी सेना की सहायता के लिए एम्युनीशन की पेटियां फैंकी जो शत्रु सीमा के पास जा पड़ीं। यदि वह एम्यूनीशन पाकिस्तानियों के हाथ पड़ जाता तो कोटली उसी दम भस्मसात हो जाती साथ ही सेना की भी भारी क्षति होती। श्री वेद प्रकाश ने शत्रु की गोलियों की बौछाड़ में स्वयंसेवकों को साथ लेकर वे पेटियां अपनी सेना को लादीं। सातवीं बार के प्रयत्न में श्री वेद प्रकाश शत्रु की गोली का निशाना बन गये। देश रक्षा के लिए, भारत माता की सेवा के लिए ऐसा आत्म बलिदान उस चिरन्तन और ध्येय पथ की साधना का परिचायक है जिस तपोसिद्धि के लिये अपने कितने ही स्वयंसेवकों ने स्वयं को होम किया है।

जम्मू नगर में सतवारी के समीप विशाल जंगल को साफ करके वहां हवाई जहाज़ का अड्डा बनाने में संघ के स्वयं-सेवकों ने अपूर्व उत्साह का प्रमाण दिया। नगर में पाकिस्तानी मुसलमानों के षड़यन्त्र को विफल बनाने वाले यही संघ के स्वयंसेवक थे। स्वयंसेवकों ने स्थिति को सम्भाल लिया, नहीं

तो जम्मू और श्रीनगर भी पाकिस्तान के ही भाग होते। इस भीषण समय में उत्साह स्थिर रखने वाली तीन ही वस्तुयें थीं देश को बचाने की उत्कृष्ट भावना, भारत को अखण्ड रखने की निष्ठा और इन भावनाओं के मूर्तिमान प्रतीक पण्डित प्रेम नाथ डोगरा का व्यक्तित्व। पण्डित जी ने दिन रात एक करते हुए स्वयंसेवकों की सहायता से रियासत की जनता में धैर्य का सञ्चार किया। पण्डित जी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विभाग संच चालक थे। इन सेवाओं ने उन्हें जनता का हृदय सम्राट् बना दिया। वह स्टेट केसरी की उपाधि से जनता द्वारा विभूषित हुए। इन सेवाओं का बदला जम्मू कश्मीर सरकार की दृष्टि में कारावास तथा शारीरिक यातनाएं होंगी किसी को स्वप्न भी नहीं था। परन्तु पण्डित प्रेम नाम जी डोगरा को देश भक्ति की अग्नि में तप कर अभी कुन्दन बनना था। महात्मा गान्धी जी की आकस्मिक मृत्यु ने वह कठोर समय भी ला दिया।

———

प्रजा-परिषद् के नेता और रियासत के त्राता

भारत के विभाजन की कटुध्वनि आकाश में गूंजने लगी। क्रिप्स मिशन, शिमला कांफ्रेंस, कैबनिट मिशन आदि सब मुस्लमानों को प्रभुता सम्पन्न राष्ट्र बना देने की चिन्ता में प्रयत्नशील थे। अंग्रेज़ों की कूट नीति एक तरफ मुसलमानों को भारत के टुकड़े कराने पर उकसा रही थी दूसरी ओर रियासतों के शासकों के हृदयों में स्वतन्त्र राज्य निर्माण करने की भावना भर रही थी।

रियासत जम्मू कश्मीर के हिन्दू एक आत्म सन्तोष की भावना में मस्त राजनीतिक तौर पर संगठन की महत्ता से बिल्कुल कोरे थे। राजा हिन्दू है इस लिए राज अपना है इस गलत भावना से अभिभूत वे इकट्ठे मिल कर बैठना शायद

पाप समझते थे। पं० प्रेम नाथ जी ने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के रूप में हिन्दू समाज का संगठन किया था परन्तु वह तो सांस्कृतिक कार्य था राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कार्य-कर्ता प्रो० बलराज मधोक जो डी० ए० वी० कालेज श्रीनगर में इतिहास के प्रोफेसर तथा वाइस-प्रिंसीपल थे, पण्डित जी से इस राजनीतिक संगठन की महत्ता पर बात-चीत करते रहते थे। उन्होंने रियासत के भविष्य को भली भांति परखा और महसूस किया कि जम्मू प्रांत के लोगों की भी अपनी राजनीतिक संस्था होनी चाहिए।

श्रीनगर में नेश्नल कांफ्रेंस ने मुस्लिम संस्था के रूप में काम किया था। और १६३६ से राष्ट्रीयता का लिबास पहन कर एक राष्ट्रीय संस्था के रूप में काम कर रही थी। शेख अब्दुल्ला का नेतृत्व उसे प्राप्त था। पण्तित जवाहर लाल नेहरू जी की मित्रता और इण्डियन नेश्नल कांग्रेस तथा स्टेट पीपल्ज कांफ्रेंस की सहायता प्राप्त होने के कारण कश्मीर की नेश्नल कांफ्रेंस का नाम था।

जम्मू प्रांत में गौ रक्षा आन्दोलन ने हिन्दू-सिक्ख नौ-जवान सभा को जन्म दिया था परन्तु कुछ समय के पश्चात् सिक्खों ने राजनीति के दांवपेच में आकर हिन्दुओं से पृथक होना अनिवार्य समझा परन्तु फिर भी हिन्दू नेताओं ने हिन्दू राज्य सभा के नाम से संस्था को चलाये रक्खा इसका कार्य प्रायः हिन्दू राजा की हिमायत में ब्यान दे देना या कभी वार्षिक अधिवेशन बुला कर अपनी सार्थकता मात्र सिद्ध कर देना था। संगठन के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ही

था जिसने समाज को राजनीति के विषय में भी चेतना एवं स्फूर्ति प्रदान की ।

१९४७ में पं० प्रेम नाथ जी की अध्यक्षता में जम्मू प्रांत के प्रमुख व्यक्तियों ने 'प्रजा-परिषद्' नाम की संस्था का निर्माण किया। समझदार जनता ने इसका स्वागत किया । परन्तु भारत के विभाजन और अंग्रेजों के सत्ता हस्तान्तरण ने ऐसा तूफान उत्पन्न किया जिससे रियासत बच न सकी । रियासती हकूमत की बागडोर महाराजा के हाथ से छीन कर नेशनल-कांफ्रेंस के हाथ में सौंपी गई। जम्मू प्रांत की किसी भी संस्था का सहयोग आवश्यक न समझा गया।

प्रजा-परिषद् अभी नव-जात शिशु के रूप में ही थी । नेशनल कांफ्रेंस एक हकूमती पार्टी के रूप में जम्मू में आई और अपने शासन के बलबूते पर प्रांत में पैर पसारने लगी । शेख अब्दुल्ला और नेशनल कांफ्रेंस के अधिकारी शासन मद में इतने मस्त थे कि उनके पैर पृथ्वी पर न टिकते थे। नेहरू जी की मित्रता और राष्ट्रीय मुस्लमान होने का गर्व कुछ कम मादक बातें न थी, कि गांधी जी की हत्या ने कड़वे करेले पर नीम चढ़ादी। अब तो भारत भर के हिन्दू कांग्रेस के रोष की अग्नि में जलने लगे और रियासत जम्मू कश्मीर में नेशनल कांफ्रेंस ने नई नई संस्था प्रजा-परिषद को अपना विरोधी मान कर उसके नेताओं और कार्य-कर्ताओं को इस दमन चक्र में लपेट लिया ।

१९४८ में पण्डित प्रेम नाथ जी को गिरिफ्तार कर लिया गया। इन पंक्तियों के लेखक को भी पंडित जी के साथ जम्मू और श्रीनगर के कारावास का सौभाग्य प्राप्त हुआ। ये गिरिफ्तारियां एक प्रकार से प्रजा-परिषद के लिए खाद सिद्ध हुईं। पण्डित जी की गिरिफतारी प्रांत के मान को चुनौती थी। सारे प्रांत में राजनीति की सिहरन पैदा हुई और शेख अब्दुल्ला की प्रतिकार मयी भावना और उदण्डता ने जनता में संगठन का निर्माण किया।

शेख अब्दुल्ला ने उस काल में महाराजा हरि सिंह को रियासत से बाहर निकलवाया। भारत के विधान में कश्मीर के लिए पृथक विधान की नींव धारा ३७० रखवाई और प्रगति शील कानूनों के नाम पर रियासत के लोगों की ज़मीनें बिना मूल्य दिये छीन लीं। प्रजा-परिषद् ने रियासत के पृथक विधान तथा शेख के दमन चक्र के विरुद्ध आवाज़ उठाई और संगठन करके समाज को शेख के स्वतन्त्र सुलतान बनने के इरादे से सचेत किया। भारत सरकार को भी चेतावनी दी। परन्तु उस समय प्रजा-परिषद् की आवाज नक्कार खाने में तूती की आवाज़ के समान महत्व नहीं रखती थीं।

प्रजा परिषद भारत सरकार की उदासीनता से भी हतोत्साह नहीं हुई और अपने ध्येय पथ पर अडिग रूप से चलती रही।

प्रजा परिषद की मांग थी कि रियासत जम्मू कश्मीर को भारत की अन्य रियासतों की सतह पर लाया जाये।

धारा ३७० को भारतीय संविधान से हटाया जाये। परमिट सिस्टम को समाप्त किया जाए। भारत का राष्ट्रीय ध्वज ही रियासत का ध्वज हो, देश की सुप्रीम कोर्ट रियासत का सर्वोच्च न्यायालय हो, भारत का चुनाव अधिकारी ही रियासत में चुनाव कराये। देश का राष्ट्रपति ही रियासत का राष्ट्रपति हो। इस प्रकार प्रजा परिषद की मांग 'एक प्रधान एक विधान और एक निशान" के जय घोष के रूप में रियासत ही क्या भारत के बच्चे २ की जबान पर दुहराई जाती थी।

कोई आठ महीने की कैद के पश्चात् पण्डित जी श्रीनगर जेल से रिहा किए गये।

दमन चक्र का दूसरा दौर १९५२ में प्रारम्भ हुआ। जब एक स्थानीय कालेज में राष्ट्रीय ध्वज के स्थान पर नैश्नल कांफ्रेंस के हल वाले लाल झण्डे के अभिवादन पर प्रोटेस्ट के कारण कुछ विद्यार्थियों को गिरिफतार किया गया। आग भड़क उठी और उस समय के गृह मन्त्री (आज के प्रधान मन्त्री) बख्शी गुलाम मुहम्द ने ७२ घण्टे का कर्फ्यू लगा कर प्रजा परिषद के नेताओं को गिरिफतार करना शुरू किया। कई कार्य कर्त्ता गवर्नमैंट अधिकारियों को चकमा देकर इधर उधर हो गये। पण्डित जी को गिरिफतार करके श्रीनगर ले जाया गया। विद्यार्थियों पर घोर अत्याचार हुए। जिन अत्याचारों ने उन्हें भूख हड़ताल करने पर मजबूर किया और २० छात्रों की ३५ दिन की भूख हड़ताल ने गवर्नमैंट को डग-मगा दिया। स्वर्गीय डा० श्यामा प्रसाद

मुकर्जी ने पार्लियामेंट में शेख साहब की स्वतंत्र कश्मीर की भावना को बेनकाब किया। अन्त में स्वर्गीय गोपाला स्वामी आयंगर के आने पर पण्डित जी और छात्रों को जेल से रिहा किया गया। दमन चक्र और उसको निरर्थक बनाने का उग्र प्रयत्न तीसरा दौर था। जब प्रजा परिषद ने एक विशेष आयोजन से और दृढ़ निश्चय से दोनों सरकारों को सही रास्ते पर आने के लिये चुनौती दी।

यह महान् आन्दोलन ८ महीने चला। इसमें हजारों व्यक्तियों, माताओं और बहिनों ने भाग लिया और जेलखानों को भर दिया। १५ वीरों ने शहीद होकर राष्ट्रीय ध्वज की शान को बढ़ाया। भारत माता ने अपने वीर सपूत डा० श्यामा प्रसाद मुकर्जी को इस संग्राम में सेनानी बना कर भेजा जिसे रियासत कश्मीर के अधिकारियों ने षड़यन्त्र से मरवा डाला।

लोक तन्त्र का मुंह काला करने वाली इस घटना की जांच करवाने में गवर्नमैंट अभी तक टाल-मटोल कर रही है।

पण्डित प्रेम नाथ जी की यह तीसरी जेल यात्रा थी। इस महान् आन्दोलन का यह प्रभाव हुआ कि शेख अब्दुल्ला अपने असली रंग में प्रकट हुआ। और भारत सरकार तथा भारतीय जनता को जो उसने धोखे में रक्खा हुआ था वह पर्दा हटा और स्वतन्त्र कश्मीर का सुल्तान बनने का स्वप्न देखने वाला शेख अपने कुकर्मों का फल भोगने के लिये जेल भेजा दिया गया परन्तु इस कारावास ने उसकी प्रायश्चित

की भावना को सचेत नहीं किया है।

प्रजा परिषद की बातों को सुनकर तथा उनका साक्षात् अनुभव प्राप्त करके लोग इसकी महत्ता और कर्तव्य को समझ गये हैं। पहले चुनावों में प्रजा परिषद ने गवर्नमैंट की बेज़ाब्तगियों को देख कर प्रोटेस्ट करते हुए चुनाव का बहिष्कार कर दिया था, परन्तु १९५६ के चुनावों में प्रजा परिषद ने भाग लिया और यदि गवर्नमैंट धान्दली न मचाती तथा सन्दूकचियां न तोड़ती तो विधान सभा में पन्द्रह, बीस के बीच प्रजा परिषद के सदस्य आ जाना कोई कठिन बात नहीं थी। प्रजापरिषद के पांच सदस्य असैम्बली में आ गये हैं। नेशनल कान्फ्रेंस की पारस्परिक फूट के कारण उसका एक ग्रुप उससे कट कर डेमोक्रेटिक नेशनल कान्फ्रेंस के रूप में सामने आया है। इस ने प्रजा परिषद के सिद्धांत को स्वीकार कर भारतीय सुप्रीमकोर्ट और चुनाव अधिकारी के क्षेत्र में रियासत को लाने की मांग की है। परन्तु इन दोनों ग्रुपों में अधिक मत भुटाव पदों की बन्दर बांट पर है। यद्यपि एक ओर विरोधी दल की स्थापना प्रजातन्त्र की भावना के प्रसार के लिये वांछनीय है। तथापि जिस नैतिक उत्साह और धैर्य से पं० प्रेमनाथ जी जनता के भावों की तर्जमानी करते हैं वह निर्भकिता और नैतिकता आज के स्वार्थ प्रधान युग की किसी भी अन्य पार्टी के नेताओं में पाना कठिन है।

प्रजा परिषद के बाकी चार संसद सदस्य पण्डित प्रेमनाथ जी का नेतृत्व पा कर अपने आपको धन्य समझते हैं और

उनकी छत्र-छाया में वैधानिक क्षेत्र में अग्रसर हो रहे हैं। पण्डित प्रेम नाथ जी महाराजा के समय की असैम्बली के दो बार सदस्य रह चुके हैं। इस लिए उस क्षेत्र के दाव पेचों से भली प्रकार परिचित हैं।

आज पण्डित जी के व्यक्तित्व के प्रभाव से प्रजा परिषद् रियासत के कोने कोने में पहुँची हुई है। सरकार के भ्रामक प्रचार से जो २ गलत धाराएं कश्मीर के मुस्लमानों में प्रसारित की कई थीं वे असैम्बली के भाषणों से बहुत हद तक दूर हुई हैं खौर सब लोग प्रजा परिषद् के दृष्टिकोण कोण को भली भांति समझने लगे हैं। पण्डित जी पिछले दस वर्ष से प्रजा परिषद् के प्रधान के रूप में जनता के विश्वास का पात्र बनते चले आ रहे हैं और अब प्रजा परिषद् का ग्यारहवां वार्षिक अधिवेषण भी उन्हें प्रधान के रूप में पाकर धन्य होने वाला है।

अखिल भारतीय नेता के रूप में

डा० श्यामा प्रसाद मुकर्जी के निधन के पश्चात् भारतीय जन संघ की पंक्तियों में निराशा तथा अधीरता का आना अनिवार्य था। यह आकस्मिक चोट अच्छे धीर वीर व्यक्तियों का भी दिल दहला देने वाली घटना थी। उसके साथ ही उनके उत्तराधिकारी का जन संघ से विद्रोह करके पृथक हो जाना दूसरी चोट लगी। कार्य्य कर्ताओं का धैर्य स्खलित होने लगा। विरोधियों की चढ़ मची। उस समय आवश्यकता महसूस होने लगी ऐसे व्यक्ति की जिसकी निष्ठा अडिग हो, जिसका चरित्र निष्कलंक हो और जो अपने बलिदान और सेवा भाव से जनता में तथा कार्य-कर्ताओं में विश्वास और धैर्य का वातावरण उत्पन्न कर सके। डा० मुकर्जी के पश्चात् जन संघ को नव युवकों की संस्था समझा जाने लगा था। उस असमंजसमय समय में भारत

की दृष्टि पं० प्रेम नाथ डोगरा पर पड़ी। देश की मांग पर पण्डित जी ने यह भारी उत्तरदायित्व सम्भाला और अपने अदम्य उत्साह, निर्भीकता और सद्व्यवहार तथा राष्ट्र को परम वैभव पर ले जाने की तीव्र इच्छा से भारत भर का भ्रमण किया और लोगों में विश्वास का वातावरण उत्पन्न किया। जैसा ऊपर भी वर्णित है इस वृद्धावस्था में पंजाब के भ्रमण में आपने १५ दिनों में ६० स्थानों पर भाषण दिये तथा मीटिंगें लीं। उनकी इस कर्मठता को देख कर नवयुवक भी दान्तों तले उंगलियां दबाते थे।

पण्डित जी के भारतीय जन संघ के प्रधान बनने से कार्य-कर्ताओं में एक नवीन उत्साह का उदय हुआ और कर्मठता तथा सच्चरित्रता की प्रतिमा को अपने बीच पाकर हतोत्साह नवयुवकों ने धैर्य का आंचल सम्भाला तथा डगमगाती जन संघ की नैय्या स्थिर और मन्थर गति से चलने लगी। जन संघ के इतिहास में पं० प्रेम नाथ जी का नाम उसके निर्माण कर्ताओं की श्रेणी में गर्व से लिखा जाएगा।

रियासत जम्मू कश्मीर के इतिहास में यह चिर स्मरणीय और अद्वितीय घटना रहेगी कि रियासत के एक सुपुत्र ने अखिल भारतीय संस्था के प्रधान पद को सुशोभित कर रियासत जम्मू कश्मीर को शब्दों के यथार्थ अर्थों में भारत का शिरोमणि बनाया है।

यह पण्डित जी का व्यक्तित्व था जिसने रियासत को

भारत में चमकाया। और देश भक्ति की पुस्तक में रियासत का नाम स्वर्ण अक्षरों में दर्ज कराया।

उपसंहार

पण्डित जी जम्मू नगर पालिका के १७ वर्ष तक उपप्रधान के पद को सुशोभित करते रहे। रियासत जम्मू-कश्मीर की कोई ऐसी संस्था नहीं जो पण्डित जी को अपने बीच पाकर धन्य न होती हो। पण्डित जी सब के लिए आशा का केन्द्र आलोक स्तम्भ और आश्रय का स्थान हैं। आपकी शांत प्रकृति और गम्भीर स्वभाव प्रशंसनीय तथा अनुकरणीय है। यह पण्डित जी का व्यक्तित्व है कि विद्रोही, विरोधी तथा रुष्ट व्यक्ति भी उनके पास पहुंच कर समाधान पाता है। विरोधी भी उनकी मिलनसारी और पात्रता के प्रशंसक हैं। पारिवारिक जीवन की दृष्टि से पण्डित जी अपनी अर्धांगिनी और दत्तक पुत्र के साथ जीवन व्यतीत करते हैं परन्तु पण्डित जी का अब कोई व्यक्तिगत जीवन नहीं है। वह समाज की धरोहर हैं। उनका एक एक क्षण समाज सेवा में ही व्यतीत होता है। रियासत जम्मू कश्मीर और समस्त देश अपने इस वीर धीर सपुत्र पर जितना भी गर्व करे कम है। पण्डित जी का व्यक्तित्व प्रजा परिषद् का मान दण्ड है।

———...

पंडित प्रेम नाथ डोगरा जी के व्यक्तित्व पर श्याम जी ने अपने स्वभाव सदृश सरल संक्षिप्त परन्तु आवश्यक और ईप्सित परिचयात्मक निबन्ध लिखा है ।

ब्राह्मण सभा और सनातन धर्म सभा के सामाजिक क्षेत्रों में सहयोगी के रूप में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सांस्कृतिक क्षेत्र में डिविज़नल-प्रचारक के रूप में तथा प्रजा-परिषद् के राजनीतिक क्षेत्र में संगठन मन्त्री के रूप में श्याम जी ने पण्डित जी को बहुत नज़दीक से देखा है इसलिये उनके लिखित निबन्ध में किसी भी बात को प्रमाणिकता से स्वीकार किया जा सकता है ।

लेखक

रियासत की अस्थिर वृत्तियों ने डोगरा जी के महान व्यक्तित्व को यथेष्ट लिखित रूप में देश के सम्मुख नहीं आने दिया । इस प्रयास से यह त्रुटि-बड़ी हद तक दूर होगी । परन्तु हमारा आग्रह है कि श्याम जी इस महान व्यक्तित्व की विस्तृत जीवनी प्रदान करें क्योंकि पण्डित जी का कर्तृत्व रियासत जम्मू कश्मीर की उस विशेष विषम-परिस्थिति से सम्बद्ध है जिसमें उनके त्याग और बलिदान में रियासत को भारत से विच्छिन्न होने तथा महान्-षड्यन्त्र में फंसने से बचाया है । पण्डित जी का जीवन वृत्त-वर्तमान इतिहास का उज्जवल पृष्ठ है । उन्होंने रियासत जम्मू कश्मीर को वास्तव में भारत का शिरोमणि बनाया है और श्याम जी ने देश भक्तों की एतिहासिक ग्रंथ मालिका में एक और सुन्दर पुष्प जोड़ कर डुग्गर देश के मान को बढ़ाया है ।

—ऋषि कुमार कौशल